मोहन राकेश-गोपालदास नीरज की जन्मशताब्दी पर कार्यक्रम आयोजित

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्योत्साव के पांचवें दिन भारत की अवधारणा पर विचार-विमर्श के साथ ही लेखक मोहन राकेश एवं कवि गोपालदास नीरज को उनकी जन्मशताब्दियों के अवसर पर याद किया गया। मोहन राकेश जन्मशती संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने की और बीज वक्तव्य प्रख्यात हिंदी नाट्य समालोचक जयदेव तनेजा ने दिया। आरंभिक वक्तव्य हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक गोविंद मिश्र ने दिया। अपने स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने मोहन राकेश के व्यक्तित्व को बहुआयामी बताते हुए कहा कि उनके लेखन के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है। अपने आरंभिक वक्तव्य में गोविंद मिश्र ने कहा कि वह पहले ऐसे नाटककार हैं जिनके नाटक, नाटक के स्तर पर सौ फीसदी खरे उतरते हैं। उनके लेखन का द्वंद उनके निजी जीवन का भी द्वंद्व है और वह समाज को आंकने के लिए कई सूत्र देता है। मोहन राकेश पर वृहद काम कर चुके जयदेव तनेजा ने कहा कि एक लेखक के रूप में मोहन राकेश हिंदी साहित्य के सबसे ज्यादा एक्सपोस्ड लेखक हैं। उन्होंने अपने बारे में पूरी ईमानदारी और दबंगई से लिखा और स्वीकार किया। उन्होंने उनके बारे में गढ़ लिए गए बहुत से मिथकों के बारे में बात करते हुए कहा कि उन्होंने पहली बार हिंदी नाटककार को गरिमापूर्ण छवि प्रदान की।